ब्राह्मण साम्राज्य

शुंग वंश (185-73 BC)

- मगध पर शासन करने वाला यह पहला गैर क्षेत्रीय राजवंश था।
- इस वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग थे।
- इस वंश का प्रथम शासक पुष्यमित्र शुंग था।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीपुत्र बनाई जबकि द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया। विदिशा का पुराना नाम बेसनगर (MP) था।
- पुष्यमित्र शुंग एक कट्टर ब्राह्मण था। यह 36 वर्षों तक शासन किया।
- भारत में पुनः वैदिक धर्म की स्थापना करने का श्रेय पुष्यमित्र शुंग को जाता है।
- इस वंश का शासन 112 वर्षों तक चला।
- इसने बहुत बौद्ध स्तूपों तथा मठों को ध्वस्त करा दिया।
- पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का विरोधी शासक माना जाता है। इसका प्रमाण दिव्यावदान से प्राप्त होता है। हालांकि इनके काल में कई बौद्ध विहार का भी निर्माण हुआ।
- पुष्यमित्र शुंग ने मध्यप्रदेश के साँची स्तूप की खिड़कियों को तांबे का कराया जबकि भरहुत (MP) स्तूप की खिड़कियों को पत्थर का करवाया।
- पुष्यमित्र शुंग के काल में अशोक द्वारा निर्मित सांची एवं भरहुत स्तूप का आकार दुगुना करवाया गया था। वर्तमान में सांची के स्तूप का जो स्वरूप है वह पुष्यमित्र शुंग के काल का ही देन है।
- इसके समय बौद्ध पुस्तक जातक ग्रंथ की रचना हुई।
- पाणिनी ने अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) लिखा।
- मनु ने मनुस्मृति लिखा। गर्गी ने गर्गीसंहिता लिखा।
- जिनसेन ने हरीवंश की रचना किया।
- बौद्ध चैत्य भवन का निर्माण इसी वंश के समय हुआ था।
- पुष्यमित्र शुंग ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र को ही बनाया था। इनके काल में कुल मिलाकर दो युद्ध किए गए थे।
  (1) विदर्भ का युद्ध
  (2) यवन आक्रमणकारी का युद्ध
- विदर्भ (बरार) में चल रहे उत्तराधिकारी के युद्ध का लाभ उठाकर पुष्यमित्र शुंग ने अग्निमित्र के नेतृत्व में सेना भेजा। जिसमें अग्निमित्र विजयी हुए थे। इसकी जानकारी कालीदास की रचना मालविकाग्निमित्र से मिलती है।
  Note : कालीदास की पुस्तक **मालविकाग्निमित्र** में **अग्निमित्र** एवं **मालविका** का प्रेम-प्रसंग की चर्चा है।
- इसके समय दो यमन विदेशी आक्रमण हुए। दोनों ही यमन आक्रमण को पुष्यमित्र शुंग ने अपने बेटे अग्निमित्र द्वारा विफल कर दिया।
- पहले आक्रमण को नेतृत्व डेमेट्रियस ने किया।
- दूसरे आक्रमण का नेतृत्व मिणाण्डर (मिलिंद) ने किया।
- मिलिंद (मिणाण्डर) को बौद्ध भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जिससे उसने बौद्ध धर्म अपना लिया। इन दोनों ही आक्रमण के समय पुष्यमित्र शुंग विजय हुए और इस अवसर पर पुष्यमित्र शुंग ने पतंजलि के नेतृत्व में दो अश्वमेघ यज्ञ करवाया एवं अपने राजधानी पाटलीपुत्र स्थानांतरित करके विदिशा को बनाया।
- कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर दिया था।
- इस वंश में कुल 10 शासक थे। पहला शासक पुष्यमित्र शुंग, नौवां शासक भागभद्र एवं दशवां शासक देवभूति थे।
- इस वंश के शासक भाग्यभ्रद के दरबार में यवन (विदेशी) राजदूत हेलियोडोटस आया था। जो भागवद् धर्म अपना लिया।
- इसने भगवान विष्णु के सम्मान में विदिशा या वेसनगर (मध्यप्रदेश) में गरूड़ध्वज अभिलेख का निर्माण कराया था। उसने उसपर भगवान विष्णु के लिए देवदेवश्य शब्द का प्रयोग किया।
- शुंग राजवंश का शिलालेख जालंधर (पंजाब) से मिलता है।
- इस काल में संस्कृत भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ।
- शुंग वंश के काल की अर्थव्यवस्था जातक ग्रंथ एवं मिलिन्दपन्हो नामक पुस्तक से मिलता है।
- इस वंश के 10वें एवं अंतिम शासक देवभूति थे जिनकी हत्या उन्हीं के मंत्री वासुदेव ने कर दी और इसके स्थान पर कण्णव वंश की स्थापना कर दी।

कण्णव वंश (73-30 BC)

- इस वंश के संस्थापक वासुदेव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विदीशा को बनाया।
- **इस वंश में कुल 4 शासक हुए–**
  (1) वासुदेव, (2) भूमिपुत्र, (3) तरायण एवं (4) सुशर्मा।
- इस वंश का दूसरा नाम कणवायांग था।
- यह वंश 43 वर्षों तक शासन किया।
- कण्णव राजा को पुराण में शुंग मित्र के नाम से पुकारा जाता था।
- कण्णव साम्राज्य पर पहला आक्रमण शक का हुआ। ये ब्राह्मण जाति के थे।
- इस वंश में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला शासक भूमिपुत्र था जो 14 वर्ष तक शासन किया।
- इस वंश का अयोग्य एवं दुर्बल अंतिम शासक सुशर्मा थे। जिसकी हत्या उसके मंत्री शिमुक (आंध्र राजा) ने 30 ई.पू. में कर दी और इसके स्थान पर सातवाहन वंश की स्थापना कर दी।

BY KHAN SIR (खान सर)

सातवाहन वंश (प्रतिष्ठान)
(30 BC-250 AD)

- इस वंश के संस्थापक **सिमुक** थे। जिसकी राजधानी **तगर** थी।
- प्रारम्भ में यह वंश महाराष्ट्र के क्षेत्र में था, किन्तु शक राजाओं ने इन्हें महाराष्ट्र छोड़ने पर विवश कर दिया।
- सातवाहन वंश को आंध्रप्रदेश में स्थानान्तरित होना पड़ा। जिस कारण पुराण में इन्हें आंध्र सातवाहन भी कहते हैं।
- सातवाहन की राजधानी प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) थी जो गोदावरी नदी के तट पर स्थित था।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत तथा लिपि ब्राह्मी थी।
- सातवाहन वंश किसी न किसी रूप में 3 शताब्दियों तक बने रहें। जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है।
- शातकर्णी प्रथम सातवाहन वंश का पहला शासक था। इसकी जानकारी नानाघाट अभिलेख (पूणे) से मिलती है। जो उसकी पत्नी नैनिका द्वारा बनवाया गया।
- शातकर्णी प्रथम ने दक्षिणापथपति तथा अप्रतिहत् चक्र की उपाधि धारण किया।
- शातकर्णि प्रथम शासक का नाम साची स्तूप के प्रवेश द्वार पर अंकित है।
- शातकर्णि प्रथम द्वारा दो अश्वमेघ यज्ञ और एक-राजसूय यज्ञ करवाया गया था।
- सातवाहन वंश का सबसे योग्य शासक हाल था।
- हाल ने प्रकृत भाषा में गाथासप्तशती की रचना किया था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गौमती पुत्र शातकर्णि था। इसके समय नासिक के शक शासक नहपान ने आक्रमण कर दिया, किन्तु गौतमीपुत्र शातकर्णि ने उसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी महाराष्ट्र के नासिक जोगलथंबी के मिले सिक्कों से मिलती है। जिसके एक ओर गौतमी पुत्र शातकर्णी एवं दूसरी ओर नहपान का नाम और चित्र है।
- जिससे पता चलता है कि गौतमीपुत्र शातकर्णी ने शक शासक नहपान को हराया था।
- गौतमीपुत्र शातकर्णि ने बौद्ध संघ को अजकालकीय तथा कार्ले के भिक्षु संघ को कर्जक नामक ग्राम दान में दिया।
- गौतमीपुत्र शातकर्णि ने सातवाहन वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः लौटाया।
- इस वंश का अगला शासक वशिष्ठ पुत्र पुल्लुमावी था।
- इसके समय पुनः उज्जैन के शक आक्रमण हुआ। इस बार शक आक्रमण का नेतृत्व रूद्रदामन कर रहा था।
- रूद्रदामन ने वशिष्ठ पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया, किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित हो गए।
- इन्होंने आंध्रप्रदेश पर विजय प्राप्त कर प्रथम आंध्र सम्राट की उपाधि धारण किया।
- पुलुमावी ने अमरावती स्थित बौद्ध स्तूप का किलाबंदी करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक यज्ञश्री शातकर्णि था। इनके सिक्के पर जहाज का चित्र अंकित था।
- सातवाहन वंश में उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का काम किया।
- ब्राह्मणों का सबसे पहले भू-दान सातवाहनों ने देना शुय किया, किन्तु सर्वाधिक भूदान गुप्त शासकों ने किया।
- वेतन के बदले भूमि देने की सामंति व्यवस्था सातवाहन ने प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक प्रयोग गुप्त राजाओं ने किया।
- इस वंश के समय गांव के प्रधान को गौल्मिक कहा जाता था।
- इस वंश में दक्कन के क्षेत्र में कपास फसल उगाया जाता था।
- सातवाहन समाज मातृसतात्मक था।
- यहाँ नाम के पहले माता का नाम लिखा जाता था, किन्तु राजा पुरूष ही होता था।
- इस समय सीसा (Pb) के सिक्का का प्रयोग होता है।
- चाँदी के सिक्के को कासापर्ण तथा सोने के सिक्के को सुवर्ण कहते थे।
- सातवाहन साम्राज्य के भूमि गोदावरी नदी घाटी में थी, जिस कारण यह अत्यधिक उपजाऊ थी।
- ऐसा कहा जाता है कि सातवाहन काल की भूमि उस समय के सबसे उपजाऊ भूमि थी।

Oneliner Question :-

★ किस यूरोपीय विद्वान ने जस्टिन आदि यूनानी लेखकों द्वारा प्रयुक्त सेण्ड्रोकोट्टस नाम की पहचान चंद्रगुप्त मौर्य के रूप में की **-विलियम जोन**

★ यूनानी लेखकों ने चंद्रगुप्त मौर्य के लिए किस नाम का प्रयोग किया हैं **-सैंडरोकोट्टस तथा एन्ड्रोकोट्स**

★ प्रथम भारतीय साम्राज्य स्थापित किया गया था **-चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा**

★ कौटिल्य प्रधानमन्त्री था **-चंद्रगुप्त मौर्य का**

★ चाणक्य अपने बचपन में जाने जाते थे **-विष्णु गुप्त के नाम से**

★ मैक्यावेली के प्रिन्स से तुलना की जा सकती है **-कौटिल्य के अर्थशास्त्र की**

★ बुलंदीबाग प्राचीन स्थान था **-पाटलिपुत्र का**

★ चंद्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूकस को पराजित किया था **-305 ईसा पूर्व**

★ सर्वप्रथम किस इतिहासकार ने सैन्ड्रोकोटस तथा एन्ड्रोकोटस नामों का तादात्मय चंद्रगुप्त के साथ स्थापित किया था **-सर विलियम जोंस**

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ बौद्ध तथा जैन ग्रंथ चंद्रगुप्त मौर्य को किस जाति का सिद्ध करते हैं **–क्षत्रिय जाति का (मोरिय क्षत्रिय)**

★ किस ग्रंथ में चंद्रगुप्त को वृषल तथा 'कुलहीन' कहा गया है **–मुद्राराक्षस से**

★ किस अभिलेख से ज्ञात होता है कि राज्याभिषेक के बीस वर्ष बाद स्वयं अशोक ने लुम्बिनी में एक स्तम्भ बनवाया और लुम्बिनी ग्राम को कर में छूट देकर 1/8 भाग कर दिया था **–रुम्मनदेई स्तम्भ अभिलेख**

★ निम्नलिखित में से मौर्यकाल में लिया जाने वाला कर 'सेतु' किस प्रकार का था **–फल-फूल एवं सब्जियों पर लगाने वाला कर**

★ चंद्रगुप्त ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में किस धर्म को अपनाया था **–जैन धर्म को**

★ सर्वप्रथम किस इतिहासकार ने यह बताया था कि मयूर मौर्यों का वंशीय चिन्ह था **–ग्रुन्वेडेल**

★ किसने चंद्रगुप्त की सेना को 'डाकुओं का गिरोह' कहा है **–जस्टिन ने**

★ किस इतिहासकार के विवरण से पता चलता है कि नन्दों के विरुद्ध सहायता-याचना के उद्देश्य से चंद्रगुप्त पंजाब में सिकंदर से मिला था **–प्लूटार्क**

★ चंद्रगुप्त के प्रारम्भिक जीवन की जानकारी के लिए हमें मुख्यत: किन स्रोतों पर ही निर्भर रहना पड़ता है **–बौद्ध स्रोतों पर**

★ चंद्रगुप्त मौर्य के किस राज्यपाल (राष्ट्रीय) ने जुनागढ़ (गिरनार) का सुदूर निर्माण करवाया था **–पुष्यगुप्त ने**

★ मौर्यों काल में साम्राज्य की राजधानी थी **–पाटलिपुत्र**

★ चंद्रगुप्त मौर्य ने किस जैन साधु की शिष्यता ग्रहण की थी **–भद्रबाहु की**

★ हिन्दू राजशासन के ऊपर प्राचीनतम उपलब्ध रचना है **–अर्थशास्त्र**

★ मौर्यकाल में किस नगर को विश्व के नगरों की रानी की संज्ञा दी गयी थी **–पाटलिपुत्र**

★ निम्नलिखित व्यक्तियों में से पुराणों में किसे द्विजर्षम की संज्ञा प्रदान की गयी है **–चाणक्य**

★ मेगास्थनीज ने किस महत्त्वपूर्ण ग्रंथ की रचना की थी **–इण्डिका**

★ कौन-सा अधिकारी सीमांत पर बने दुर्गों की रक्षा करता था **–अन्तपाल**

★ यूनानी स्रोतों में बिंदुसार को किस नाम से पुकारा गया है **–अमित्रकेटस**

★ चंद्रगुप्त का सबसे पहले किस अभिलेख में उल्लेख मिलता है **–रूद्रदामन प्रथम का जूनागढ़ अभिलेख**

★ कौटिल्प के अर्थशास्त्र में चोरक, दमनक, मरुवक्क, शिशु का उल्लेख प्राप्त होता है। ये थे **–मसाले**

★ अपने अभिषेक के तेरहवें वर्ष बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अशोक ने पदाधिकारियों का एक नवीन वर्ग बनाया जिसे कहा गया **–धर्ममहामत्त**

★ किन स्तम्भ-लेखों से ज्ञात होता है कि उसने व्युष्ट, रज्जुक, प्रादेशिक तथा युक्त नामक पदाधिकारियों को जनता के बीच जाकर धर्म के प्रचार एवं उपदेश करने का आदेश दिया **–स्तंभलेख तीन एवं पाँच से**

★ अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए अशोक ने जिन आचारों की संहिता प्रस्तुत की उसे उसके अभिलेखों में क्या कहा गया है **–धम्म**

★ दिव्यावदान 'अशोक को बौद्ध' धर्म में दीक्षित करने का श्रेय किस बौद्ध भिक्षु को प्रदान करता है **–उपगुप्त को**

★ किन तमिल ग्रंथों से पता चलता है कि चंद्रगुप्त ने तमिल प्रदेश पर आक्रमण किया था **–अह्वानारू एवं पुर्नानारू**

★ मौर्यकाल में राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था **–भूमिकर**

★ कौटिल्य के अर्थशास्त्र में गुप्तचरों को क्या कहा गया है **–गूढ़पुरुष**

★ मौर्यकाल में 'दौवारिक' किसे कहा जाता था **–राजप्रसाद के रक्षक को**

★ किस स्तम्भ लेख में अशोक के सातों अभिलेख उत्कीर्ण है, जबकि शेष स्तम्भों पर केवत छ: लेख ही उत्कीर्ण मिलते हैं **–दिल्ली टोपरा स्तम्भ लेख**

★ बिंदुसार की मृत्यु के समय अशोक कहां का वायसराय था **–उज्जैन**

★ मौर्यकालीन 'कंटकशोधन' थे **–फौजदारी न्यायालय**

★ मगध में 12 वर्ष लम्बे अकाल का किस साहित्यिक कृति में जिक्र मिलता है **–परिशिष्ट पर्व**

★ अशोक ने किस अभिलेख में बुद्ध, धम्म और संघ में अपनी आस्था की घोषणा की थी **–भब्रू शिलालेख से**

★ किसने सर्वप्रथम अभिलेखों के पियदस्सि और साहित्य के अशोक का समीकरण स्थापित किया था **–टर्नर महोदय ने**

★ पाटलिपुत्र में घनानंद से मगध का सिंहासन छीनने से पहले चंद्रगुप्त किन प्रदेशों को जीत चुका था **–सिंध और पंजाब**

★ नियमित एवं स्थायी सेना रखने वाला भारतीय इतिहास में पहला ज्ञात शासक कौन था **–बिम्बिसार**

★ अशोक के शिलालेखों में उल्लिखित 'ताम्रपर्णी' किस देश के लिए प्रयुक्त हुआ है **–श्रीलंका के लिए**

★ किस ग्रंथ से हमें पता चलता है कि अशोक शिव का भक्त था **–राजतरंगिणी**

★ अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में किस शब्द का उल्लेख मिलता है **–तीर्थ**

★ मौर्य साम्राज्य में मुख्यमंत्री एवं पुरोहित की नियुक्ति के पूर्व इनके चरित्र को खूब जांचा-परखा जाता था, जिसे कहा जाता था **–उपधा परिक्षण**

BY KHAN SIR (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ दीपवंश एवं महावंश के अनुसार अशोक ने अपने राज्याभिषेक के चौथे वर्ष में किसके प्रवचन से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म को ग्रहण किया था **–निग्रोथ**

★ चंद्रगुप्त के विषय में किसका कथन है कि उसने छः लाख की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला और उस पर अपना अधिकार कर लिया **–प्लूटार्क का**

★ अशोक ने विशाल मौर्य साम्राज्य को प्रशासन की सुविधा के लिए कितने प्रांतों में बांट रखा था **–पाँच**

★ किस ग्रंथ से पता चलता है कि अशोक ने कश्मीर में वितास्ता नदी के किनारे 'श्रीनगर' नामक नगर की स्थापना की थी **–राजतरंगिणी से**

★ किन शिलालेखों से खरोष्ठी लिपि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं **–मानसेहरा एवं शहवाजगढ़ी**

★ अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम 1837 ई. में किस विद्वान को सफलता प्राप्त हुई **–जेम्स प्रिंसप को**

★ किस इतिहासकार द्वारा मात्र अभिलेखों के आधार पर अशोक का इतिहास लिखने का श्लाघ्य प्रयास किया गया है **–डॉ. भंडारकर द्वारा**

★ किस अभिलेख में अशोक का नाम अशोक मिलता है **–मास्की एवं गुर्जर में**

★ पुराणों में अशोक को कहा गया है **–अशोकवर्धन**

★ अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया **–अपने अभिषेक के आंठ्वे वर्ष लगभग 261 ईसा पूर्व**

★ अशोक की माता का नाम –सुभद्रांगी

★ भारत में शिलालेखों का प्रचलन सर्वप्रथम किया **–अशोक ने**

★ अशोक के अभिलेखों को कितने भागों में बांटा जा सकता है **–शिलालेख, स्तंभलेख, गुहालेख**

★ अशोक के शिलालेखों की संख्या है –14

★ अशोक के स्तम्भलेखों की संख्या है –7

★ रज्जुक थे **–मौर्य शासन में अधिकारी**

★ अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त भाषा है **–प्राकृत भाषा**

★ कालसी प्रसिद्ध है **–अशोक के शिलालेख के कारण**

★ भाग एवं बलि थे **–राजस्व के स्रोत**

★ मौर्यकाल में सीता से अभिप्राय है **–राजकीय भूमि से प्राप्त आय**

★ मौर्ययुगीन अधिकारी जो तौल माप का प्रभारी था **–पोत्वाध्यक्ष**

★ मौर्यकाल में शिक्षा का सर्वाधिक प्रसिद्ध केंद्र था **–तक्षशिला**

★ पुनर्विवाह वर्जित है **–मनुस्मृति में**

★ गाँवों के शासन को स्वयात्शासी पंचायतों के माध्यम से संचालित करने की व्यवस्था का सूत्रपात किया **–मौर्यों ने**

★ अंतिम मौर्य सम्राट था **–बृहद्रथ**

KHAN SIR Patna

New Batch
CHEMISTRY
Start on... 12th July
Time- 05 - 06 pm